इकाई 19 बैंकिंग अनुवाद-II

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्‌देश्य

19.1 प्रस्तावना

19.2 बैंकिंग साहित्य और पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग

19.3 बैंकिंग साहित्य का अनुवाद : पूर्वापेक्षाएँ

- 19.3.1 स्रोत और लक्ष्य भाषा पर अधिकार
- 19.3.2 विषय एवं संदर्भ सापेक्षता का बोध
- 19.3.3 पाठक वर्ग का ध्यान रखना

19.4 बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियाँ

- 19.4.1 उपयुक्त शब्द चयन की चुनौती
- 19.4.2 सामान्य प्रतीत होने वाले शब्दों का अनुवाद
- 19.4.3 एकरूपता का अभाव
- 19.4.4 पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग
- 19.4.5 विशिष्ट शब्दों–अभिव्यक्तियों का अनुवाद
- 19.4.6 वाक्य–रचना संबंधी समस्या
- 19.4.7 संक्षिप्ताक्षरों का अनुवाद
- 19.4.8 अभिव्यक्ति शैली की चुनौती

19.5 बैंकिंग साहित्य का अनुवाद : अभ्यास और विश्लेषण

19.6 सारांश

19.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

19.8 उपयोगी पुस्तकें

19.0 उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप :

- बैंकिंग साहित्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न संदर्भों और उनमें अनुवाद की स्थिति को समझ सकेंगे;
- बैंकिंग साहित्य के अनुवाद के अनुवादक के स्तर पर पूर्वापेक्षाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- बैंकिंग सामग्री के अनुवाद करते समय अनुवादक के द्वारा अनुभव की जाने वाली चुनौतियों को समझ सकेंगे; और
- बैंकिंग संबंधी अनूदित सामग्री के विश्लेषण के आधार पर अनुवाद की बारीकियों को जान सकेंगे और तत्संबंधी अभ्यास के द्वारा अनुवाद व्यवहार को समझ सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

'प्रशासनिक और वाणिज्यिक अनुवाद' से संबंधित इस पाठ्यक्रम में अब तक आप प्रशासन, संसद और विधि के क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका–महत्व आदि के बारे अध्ययन कर चुके हैं। ये वे क्षेत्र हैं, जिनका समाज से संबंध है। समाज से संबंधित एक अन्य प्रमुख क्षेत्र बैंक का है, जिसे वाणिज्यिक अनुवाद के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। इकाई 18 और 19 इसी बैंकिंग अनुवाद से संबंधित हैं। बैंकिंग अनुवाद संबंधी पिछली इकाई में आप बैंकिंग व्यवस्था के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, वाणिज्य–व्यापार में बैंकों की भूमिका, बैंकों की श्रेणियाँ, बैंकिंग साहित्य के प्रकार, बैंकिंग साहित्य के भाषागत वैशिष्ट्य के बारे में जान चुके हैं। उसमें आपको यह भी बताया जा चुका है कि बैंकों में हिंदी प्रयोग की स्थिति क्या है और अनुवाद की आवश्यकता क्यों होती है।

वास्तविकता यह है कि बैंकों सहित जीवन–व्यवहार के किसी भी क्षेत्र में भाषा की अपनी विशेष भूमिका होती है। क्षेत्र–विशेष के अनुसार भाषा का प्रयोगगत वैशिष्ट्य भी विशेष तौर पर उल्लेखनीय होता है। यह वैशिष्ट्य, खास तौर पर पारिभाषिक शब्दावली और वाक्य विन्यास आदि के स्तर पर देखा जा सकता है। इसलिए प्रस्तुत इकाई में सबसे पहले बैंकिंग साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग को संदर्भ को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही यह भी बताया गया है कि बैंकिंग साहित्य के अनुवाद के लिए अनुवादक से किस प्रकार की अपेक्षाएँ की जाती हैं। इन अपेक्षाओं पर खरा उतरने वाला अनुवादक सही अनुवाद करने की दिशा में आगे बढ़ता है। लेकिन, इस दिशा में उसके मार्ग में कई प्रकार की बाधाएँ उठ खड़ी होती हैं, जिन्हें बैंकिंग साहित्य के अनुवाद की चुनौतियों के अंतर्गत अवलोकित एवं विवेचित किया गया है। इसके अलावा, इकाई के अंत में बैंकिंग साहित्य के अनुवाद संबंधी अभ्यास के नमूने देते हुए उनका विश्लेषण किया गया है और साथ ही अभ्यास के लिए छोटे–छोटे वाक्य आदि दिए गए हैं। आइए, सबसे हम बैंकिंग साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग पर चर्चा करें।

19.2 बैंकिंग साहित्य और पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग

बैंकिंग साहित्य के अनुवादक के समक्ष मुख्य रूप से पारिभाषिक शब्दावली संबंधी चुनौती होती है। पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में आप 'अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि' शीर्षक दूसरे पाठ्यक्रम के खंड 4 में विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं। यहाँ हम बैंकिंग साहित्य के संदर्भ में इस शब्दावली प्रयोग पर विचार कर रहे हैं। इसलिए इसकी अवधारणा को संक्षेप में स्पष्ट करना उपयुक्त रहेगा।

पारिभाषिक शब्दावली की परिधि में आने वाला प्रत्येक शब्द अपने अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से संकुचित एवं सुनिश्चित हो जाता है। प्रत्येक विषय अथवा व्यवहार क्षेत्र की पारिभाषिक शब्दावली अलग होती है। कोई भी पारिभाषिक शब्द जब उस विषय की सीमाओं के भीतर जिस विशिष्ट अर्थ–संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है, उसका वही अर्थ सुनिश्चित हो जाता है। उस स्थिति में उस पारिभाषिक शब्द–विशेष को पारिभाषिक शब्दावली में शामिल कर लिया जाता है और उसे पारिभाषिक शब्द–संग्रह में दे दिया जाता है। पारिभाषिक शब्द को एक परिभाषा में बाँधते हुए हम यह कह सकते हैं कि "जिस शब्द की किसी विषय, अवधारणा अथवा या सिद्धांत के प्रसंग में सुनिश्चित परिभाषा हो, अर्थ–परिधि सुनिश्चित हो, जो विषय–विशेष में प्रयुक्त होता हो एवं जो

अपने अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से अन्य पारिभाषिक शब्द अथवा शब्दों से स्पष्ट रूप से भिन्न हो तो उसे पारिभाषिक शब्द कहा जाता है।"

पारिभाषिक शब्द सामान्य शब्दावली से भिन्न होते हैं। किसी भी नई अवधारणा को व्यक्त करने के लिए नया शब्द गढ़ा जाता है या फिर किसी पुराने शब्द के अर्थों में नया आयाम जोड़ दिया जाता है। इन स्थितियों में वह शब्द–विशेष सामान्य न रहकर विशिष्ट हो जाता है। इसलिए वह शब्द–विशेष सामान्य शब्दावली से भिन्न हो जाता है। इस तथ्य को समझने के लिए हम सूचना प्रौद्योगिकी में पारिभाषिक शब्द के रूप में आम तौर पर प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी के 'programme' शब्द को उदाहरण के तौर पर ले सकते हैं। इस 'programme' का सामान्य अर्थ "कार्यक्रम" है, लेकिन कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के संदर्भ में यह विशिष्ट अर्थ अथवा सूचना की जानकारी देता है। इस क्षेत्र में 'programme' शब्द में "एक क्रम से दिए गए आदेश" का भाव निहित होता है, इसलिए इसका हिंदी पर्याय "क्रमादेश" निर्धारित किया गया है। आम बोलचाल में "चूहे" के लिए अंग्रेजी का 'mouse' शब्द इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन, कंप्यूटर शब्दावली का "माउस", सामान्य "चूहा" नहीं है। इसी तरह, 'processing' "संसाधित करना" न होकर "प्रसंस्करण" है। इसलिए बैंकिंग में 'processing of cheque' "चेक प्रसंस्करण" है, न कि "चेक संसाधित करना"। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सामान्य शब्दकोश जहाँ प्रत्येक शब्द का व्यापक एवं विस्तृत परिचय देते हैं, वहीं पारिभाषिक शब्दावली से संबंधित कोश विषय–विशेष की सीमाओं के भीतर ही शब्द का नियत अर्थ व्यक्त करते हैं तथा कई बार ये रूढ़ अर्थ जैसा आभास भी देते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने का दायित्व भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के "वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग" (सी.एस.टी.टी.) का है। आयोग ने पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने की जो पद्धति अपनाई, वह बहुत उपयोगी एवं सटीक है। आयोग ने ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की पारिभाषिक शब्दावलियाँ तैयार की हैं। आयोग द्वारा प्रकाशित "बृहत् पारिभाषिक शब्द–संग्रह (मानविकी)" में बैंकिंग से संबंधित हजारों शब्द भी शामिल हैं। हालाँकि इस शब्द–संग्रह में ये शब्द मूलतः अर्थशास्त्र, वाणिज्य, लेखाविधि (एकाउंटेंसी), लेखा–परीक्षा (ऑडिट) आदि विषयों से संबंधित दर्शाए हुए हैं, किंतु इनका संबंध बैंकिंग से भी है। उदाहण के लिए, 'bad delivery' (दोषपूर्ण अंतरण), 'bad debts account' (अशोध्य ऋण उद्धार लेखा), 'bad debt reserve' (अशोध्य ऋण आरक्षित निधि), 'crude rate' (स्थूल दर), 'deposit account system' (जमा पद्धति खाता) आदि। इसके अलावा, भारतीय रिजर्व बैंक ने अलग से "बैंकिंग शब्दावली" तैयार करके प्रकाशित की है। अब तक इस शब्दावली के सात संस्करण निकाले जा चुके हैं, जो वर्ष 2012 में प्रकाशित हुआ था। इसके अलावा, कुछ अन्य बैंकों ने भी अपनी–अपनी शब्दावलियाँ तैयार की हैं, जो कमोबेश भारतीय रिजर्व बैंक की शब्दावली पर ही आधारित हैं। अब आम तौर पर सभी बैंक भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा तैयार की गई "बैंकिंग शब्दावली" का ही प्रयोग कर रहे हैं।

बैंकिंग जगत का कार्य–क्षेत्र अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक है। इसका वाणिज्य–व्यापार, उद्योग, अर्थशास्त्र, लेखाशास्त्र, सामान्य प्रशासन आदि से सीधा संबंध है। इसके अलावा यह विधि, प्रौद्योगिकी और समाजशास्त्र से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में इन सभी क्षेत्रों में हो रहे प्रयोगों और आयामों से जुड़ी अवधारणाओं को स्पष्ट करने में तत्संबंधी पारिभाषिक शब्दावली की अपनी विशिष्ट भूमिका है।

अगर हम क्षेत्र के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली पर विचार करें तो यह पाते हैं कि बैंकिंग और उसके अनुवाद क्षेत्र में मुख्य रूप से तीन प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली प्रयुक्त होती है। ये क्षेत्र हैं – बैंकिंग, प्रशासन और विधि।

इनमें से बैंकिंग शब्दावली के अंतर्गत मुख्य रूप से वित्त संबंधी और गौण रूप से कृषि, वाणिज्य–उद्योग, परिवहन, विधि आदि क्षेत्रों की शब्दावली का प्रयोग देखने को मिलता है। इसमें बैंकिंग कारोबार में प्रचलित हिंदी के पुराने शब्द मिलते हैं। इसके अलावा, अंग्रेजी के जरिए यूरोपीय भाषाओं के वे शब्द भी प्रयुक्त होते देखे जा सकते हैं जो आम जनता में अपने मूल रूप में या फिर किंचित परिवर्तित रूप में प्रचलित हो गए हैं। इसके साथ–साथ अंग्रेजी या अन्य विदेशी शब्दावली के आधार पर बनाए गए हिंदी पर्याय भी देखे जा सकते हैं।

ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि बैंकिंग के शब्दों को कितने वर्गों में विभाजित किया जाना चाहिए। डॉ.भोलानाथ तिवारी और डॉ. श्रीनिवास द्विवेदी ने अपनी पुस्तक "बैंकों में अनुवाद की समस्याएँ" में बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में एकरूपता की समस्या पर विचार करते हुए बैंकिंग साहित्य में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को मोटे तौर पर चार वर्गों में बाँटा है – (क) नियत पारिभाषिक, (ख) अनियत पारिभाषिक, (ग) मनमाने पारिभाषिक, और (घ) प्रसंगानुसार पारिभाषिक। पहले वर्ग के अंतर्गत उन्होंने ऐसे शब्दों का उल्लेख किया है जिनके केवल एक पर्याय हैं, यथा – 'payee' (आदाता), 'saving' (बचत), 'annexure' (अनुबंध), 'annexure' (परिशिष्ट), 'circular' (परिपत्र), 'instruction' (अनुदेश), 'endorsement' (पृष्ठांकन), 'reserve' (आरक्षण), 'encashment' (नकदीकरण)। दूसरे वर्ग के अंतर्गत वे शब्द आते हैं जिनके दो या उससे अधिक पर्याय दिए गए हैं, यथा – 'account' (लेखा, खाता, हिसाब), 'assets' (परिसंपत्ति, आस्ति), 'gross' (सकल, कुल), 'integrated' (एकीकृत, समन्वित, समेकित), 'table' (सारणी, तालिका), 'instrument' (लिखत, औजार), 'security' (प्रतिभूति, जमानत), 'pledge' (बंधक, गिरवी), 'procurement' (वसूली, उगाही, खरीद), 'price' (कीमत, मूल्य)। तीसरे वर्ग के अंतर्गत आने वाले वे शब्द हैं जो इच्छानुसार गढ़ लिए जाते हैं। जैसे 'Regional Rural Bank' (प्रादेशिक ग्रामीण बैंक), 'administration of subsidy' (उपदान का शमन), 'effects of budget' (बजट के प्रभाव), 'migration of credit' (ऋण का अन्यत्र गमन), 'improved variety' (सुधरे किस्म), 'fertiliser' (खाद), 'mandays' (मानव–दिवस), 'broad money' (स्थूल मुद्रा), 'grinding wheels' (पीसने वाले चक्के), 'ordinary rice' (सादा चावल)। चौथे प्रकार के शब्द वे हैं जिनके कई पर्याय शब्दावलियों में दिए गए हैं और अनुवादक को उनमें से किसी एक का प्रसंगानुसार चयन करना पड़ता है, जैसे – credit के पर्याय हैं – ऋण, साख, प्रत्यय, जमा; net के पर्याय हैं – निवल, शुद्ध, घटा कर; nominal के पर्याय हैं – सांकेतिक, नाममात्र, आय–व्यय, द्रव्य। प्रायः अनुवादक इनमें से एक या दो पर्यायों से ही परिचित होता है और वह हर जगह उन्हीं का प्रयोग करता रहता है जिससे अर्थ–ग्रहण में कठिनाई होती है। उदाहरणार्थ – credit entry के लिए "ऋण प्रविष्टि " न होकर "जमा प्रविष्टि" होना चाहिए। (पृ.109)

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, अनुवादक को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार की गई "प्रशासनिक शब्दावली" का इस्तेमाल करना चाहिए। उसके पश्चात भारतीय रिवर्ज बैंक द्वारा तैयार "बैंकिंग शब्दावली" को व्यवहार में लाना चाहिए। लेकिन इतना तो अवश्य ही है कि बैंकिंग साहित्य के अनुवादक को विशेष तौर पर पारिभाषिक शब्दावली का बड़ी सावधानी और सतर्कता से प्रयोग करना

होता है। चूँकि बैंकिंग के क्षेत्र में तेजी से नए–नए शब्द प्रवेश करते रहते हैं, इसलिए अद्यतन शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए, इसके नवीनतम संस्करण को ही व्यवहार में लाना चाहिए। इस कार्य में इंटरनेट आदि की भी सुविधा का लाभ उठाया जा कता है क्योंकि आज वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग और भारतीय रिजर्व बैंक आदि की शब्दावलियों तक इंटरनेट के जरिए पहुँचा जा सकता है।

पारिभाषिक शब्दावली के नवीनतम संस्करण को ही व्यवहार में लाने के बारे में भारतीय रिजर्व बैंक की शब्दावली समिति का यह निर्णय विशेष तौर पर ध्यान देने योग्य है कि "शब्दावली का ई–संस्करण हर छमाही में या कम–से–कम साल में एक बार अवश्य प्रकाशित किया जाए ताकि हिंदी के तकनीकी शब्द समय पर उपलब्ध हो सकें और विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के बीच तकनीकी शब्दावली में एकरूपता बनी रहे तथा वे अनुवाद में आने वाली समस्याओं का हल ढूँढ सकें। इससे मूल रूप में बैंकिंग साहित्य लिखने वालों को भी काफी मदद मिलेगी।" (बैंकिंग शब्दावली, प्राक्कथन, संस्करण 2012, पृ.v)। जहाँ तक विधि संबंधी शब्दावली का संबंध है, इसके लिए अनुवादक को भारत सरकार के विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय के राजभाषा खंड के विधायी विभाग द्वारा प्रकाशित "विधि शब्दावली" का प्रयोग करना चाहिए। ये शब्दावलियाँ धीरे–धीरे ऑनलाइन भी उपलब्ध हो रही हैं।

पारिभाषिक शब्दावली का संक्षिप्ताक्षरों के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। बैंकिंग क्षेत्र में इनका बड़े पैमाने पर व्यवहार होते देखा जा सकता है। संक्षिप्ताक्षरों के अनुवाद के संबंध में अभी तक कोई नियम नहीं बने हैं, इसलिए इनके प्रयोग में एकरूपता का अभाव है। वैसे, भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी 'बैंकिंग शब्दावली' के वर्ष 2012 में प्रकाशित संस्करण में हिंदी के संक्षिप्ताक्षरों को भी शामिल किया है। इस बैंकिंग शब्दावली के परिशिष्ट–I में संक्षिप्ताक्षरों की सूची गई है। इस सूची में अंग्रेजी के संक्षिप्ताक्षरों के साथ–साथ उनके पूरे रूप (full form), हिंदी संक्षिप्ताक्षर और उनके पूरे रूप शामिल किए हुए हैं। ध्यान देने की बात यह है कि हिंदी में प्रयुक्त ये संक्षिप्ताक्षर अंग्रेजी के संक्षिप्ताक्षरों का लिप्यंतरण मात्र ही हैं। लेकिन, इसमें मानकता स्थापित करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित अंग्रेजी वर्णमाला के मानक देवनागरी लिपि चिह्नों को ही प्रयुक्त किया है। निस्संदेह इससे अंग्रेजी वर्णों की देवनागरी में भी एकरूपता बनेगी। इस बैंकिंग शब्दावली की विशेष बात यह भी है कि इन मानक लिपि चिह्नों को शब्दावली में परिशिष्ट–III के रूप में भी शामिल किया हुआ है।

आइए, अब हम बैंकिंग संबंधी प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली और उनके हिंदी पर्याय देखें:

- abridged balance sheet — संक्षिप्त तुलन–पत्र
- account book — लेखा बही
- bad debt reserve — अशोध्य ऋण आरक्षित निधि
- bank reconciliation statement — बैंक समाधान विवरण
- bearer cheque — वाहक चैक
- centralised banking solution — केंद्रीकृत बैंकिंग समाधान
- cumulative time deposit — संचयी सावधि जमा
- debt crisis — ऋण संकट

- declaration of solvency — शोधनक्षमता की घोषणा
- dissolution of partnership — भागीदारी का विघटन
- double account system — दोहरी प्रविष्टि प्रणाली
- errors & omissions excepted (E&OE) — भूल–चूक लेनी–देनी
- ex-dividend — लाभांश–रहित
- fixed monthly income — नियत मासिक आय
- foreign direct investment (FDI) — विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
- gold exchange standard — स्वर्ण विनिमय मान
- government securities market — सरकारी प्रतिभूति बाजार
- household consumption — घरेलू उपभोग, घरेलू खपत
- household income — पारिवारिक आय
- income and expenditure account — आय–व्यय लेखा
- international standard — अंतरराष्ट्रीय मानक
- joint beneficiary — संयुक्त लाभार्थी
- joint stock bank — संयुक्त पूँजी बैंक
- joint venture agreement — संयुक्त उद्यम करार
- knowledge hub — ज्ञान केंद्र
- land mortgage bank — भूमि बंधक बैंक
- life saving drugs — प्राणरक्षक औषधियाँ
- liquid assets — तरल परिसंपत्तियाँ
- market friendly product — बाजार–अनुकूल उत्पाद
- merchant banking services — व्यापार बैंकिंग सेवाएँ, मर्चेंट बैंकिंग
- multicity cheque book — बहु–नगरीय चैक बुक
- no-claim bonus — दावा–शून्य बोनस
- no profit no loss — न लाभ न हानि, लाभ–हानि रहित
- non-scheduled bank — गैर–अनुसूचति बैंक
- non-taxable income — गैर–कर योग्य आय
- open market policy — खुला बाजार नीति
- outstanding advance — बकाया अग्रिम
- paid-up capital — प्रदत्त पूँजी, चुकता पूँजी
- per capita income — प्रति व्यक्ति आय
- post-dated cheque — उत्तर दिनांकित चेक
- pre-investment survey — निवेश–पूर्व सर्वेक्षण
- quasi-credit facilities — ऋणवत् सुविधाएँ, ऋण–सदृश सुविधाएँ
- quantitative credit restriction — मात्रात्मक उधार प्रतिबंध
- rate of interest — ब्याज दर
- real purchasing power — वास्तविक क्रयशक्ति
- retail outlet — खुदरा दुकान
- sleeping partner — निष्क्रिय भागीदार
- small saving drive — अल्प बचत अभियान

- special economic zone (SEZ) — विशेष आर्थिक क्षेत्र
- tax capitalization — कर का पूँजीकरण
- traveller's cheque — यात्री चेक
- unaudited financial results — अपरीक्षित वित्तीय परिणाम
- value-added tax (VAT) — वर्धित मूल्य कर
- voluntary liquidation — स्वैच्छिक परिसमापन
- weekly arear statement — साप्ताहिक बकाया कार्य–विवरण
- wholesale price index — थोक कीमत सूचकांक
- withdrawal slip — निकासी पर्ची
- working capital needs — कार्यशील पूँजी आवश्यकताएँ
- yearly arrivals — वार्षिक आमद
- zero rate of interest — ब्याज की शून्य दर

19.3 बैंकिंग साहित्य का अनुवाद : पूर्वापेक्षाएँ

आप यह अध्ययन कर चुके हैं कि बैंकिंग व्यवस्था सदियों से चली आ रही व्यावसायिक गतिविधि है। भारत में भी इसका इतिहास हालाँकि अत्यंत प्राचीन है, लेकिन आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था पश्चिम की देन है; यह व्यवस्था ब्रिटिश शासनकाल में पली–बढ़ी। इसलिए भारतीय बैंकिंग उद्योग का विकास पाश्चात्य बैंकिंग से प्रभावित और अनुप्राणित है। इस प्रभाव का ही नतीजा हुआ है कि बैंकों की प्रक्रिया एवं कार्य–पद्धति अंग्रेजी पर ही आधारित होती चली गई। स्थिति यह है कि आज भी बैंकों में मूल लेखन, पत्र–व्यवहार, फार्म, नियम–पुस्तकें, प्रचार सामग्री और आवश्यक दस्तावेज तैयार करना आदि लगभग सभी कार्य प्रमुख रूप से अंग्रेजी में ही किए जाते हैं। लेकिन इतना तो अवश्य ही रहा है कि बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात सेवा क्षेत्र के रूप में इनकी भूमिका में बड़ा परिवर्तन आया है। राजभाषा संबंधी सांविधानिक एवं विधिक प्रावधानों के कारण बैंक भी राजभाषा प्रयोग के दायरे में आ गए और उनके कार्यों में अनुवाद को भी एक नियमित स्थान मिल गया। जब तक बैंकिंग, शासन–प्रशासन आदि विविध क्षेत्रों में व्यवहार में हिंदी का चलन या मूल लेखन नहीं हो जाता, तब तक द्विभाषिकता की नीति के अनुसार अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का प्रयोग चलता रहेगा। वैसे भी प्रत्यक्ष रूप से जन–सामान्य से संबंधित होने के कारण जनता की भाषा से जुड़ाव स्थापित करने में बैंकिंग साहित्य का अनुवाद अपनी विशिष्ट भूमिका निभाता है। आज भी बैंकों के कार्य में अनुवाद की बड़ी आवश्यकता बनी हुई है।

बैंकिंग साहित्य का अनुवाद भली प्रकार से करने के लिए अनुवादक से कुछ पूर्वापेक्षाएँ होती हैं। आइए, अब हम बैंकिंग अनुवादक से की जाने वाली न्यूनतम पूर्वापेक्षाओं पर विचार करें।

19.3.1 स्रोत और लक्ष्य भाषा पर अधिकार

बैंकिंग साहित्य सहित किसी भी प्रकार के साहित्य का अनुवाद करने वाले अनुवादक के लिए यह जरूरी है कि उसका स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा पर अधिकार हो क्योंकि अनुवाद का मतलब एक भाषा के कथ्य की दूसरी भाषा में प्रस्तुति है। यह कार्य दोनों भाषाओं की सूक्ष्मताओं से परिचित हुए बिना संभव नहीं हो सकता। प्रत्येक भाषा की

अपनी भाषिक संरचना होती है, अपना व्याकरण होता है, अपनी अभिव्यक्ति शैली होती है। जैसे, अंग्रेजी भाषा की प्रकृति हिंदी से भिन्न है, जिसका वाक्य–रचना का क्रम "कर्ता, कर्म, क्रिया" होता है, लेकिन अंग्रेजी में यह क्रम है – "कर्ता, क्रिया, कर्म"।

अगर अनुवादक दोनों भाषाओं के प्रकृतिगत अंतर को अच्छी तरह से समझता है तो वह जहाँ स्रोत भाषा में व्यक्त भाव–कथ्य को भली प्रकार से समझ जाएगा, वहीं वह उन्हें लक्ष्य भाषा में व्यक्त करने की क्षमता रख पाएगा। लेकिन, उसे स्रोत भाषा की प्रकृति–स्वरूप के प्रभाव से मुक्त रहते हुए अनुवाद करना चाहिए, अन्यथा उसमें बहते हुए वह जो अनुवाद करेगा वह मूल की छाया लिए हुए होगा। ऐसा अनुवाद पूरी तरह कृत्रिम, जटिल और अटपटा हो जाता है। उदाहरण के लिए 'Admission with permission' का अनुवाद "अनुमति से प्रवेश" देखा जा सकता है, जो लक्ष्य भाषा में सार्थक अभिव्यक्ति नहीं कर पा रहा है। इसका बेहतर अनुवाद है – "पूछकर आइए।/आज्ञा लेकर अंदर आइए/आज्ञा लेकर अंदर आएँ।" इसी प्रकार, 'All public sector banks' का अनुवाद "सभी सरकारी क्षेत्र के बैंक" के स्थान पर "सरकारी क्षेत्र के सभी बैंक" अधिक उपयुक्त होगा।

स्रोत और लक्ष्य भाषा की भाषिक प्रकृति–स्वरूप के प्रभाव से मुक्ति के साथ–साथ भाषा पर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रभाव को भी ध्यान में रखना जरूरी होता है। तभी एक अच्छा अनुवादक 'Please come in' जैसे वाक्य का अनुवाद "कृपया अंदर आएँ।" करेगा, न कि "कृपया अंदर आओ।"

19.3.2 विषय एवं संदर्भ सापेक्षता का बोध

किसी भी विषय अथवा क्षेत्र की सामग्री का अनुवाद करने वाले अनुवादक से यह अपेक्षित होता है कि उसे उस विषय–विशेष का ज्ञान हो। अपने इसी ज्ञान के आधार पर उसे यह पता चल पाता है कि मूल पाठ किस विषय से संबंधित है। विषय की अज्ञानता अनुवाद में भूलें या अर्थ का अनर्थ करवा देती हैं।

बैंकिंग साहित्य के अनुवादक से बैंकिंग विषय की सामान्य जानकारी की अपेक्षा रहती है। बैंकिंग के कई क्षेत्र हैं और क्षेत्रों के अनुसार कई विभाग। जैसे ऋण, विशेष लेखा, कार्मिक सेवाएँ, निरीक्षण, विवरण, आयोजना और विकास, सतर्कता, व्यय, परिसर, अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग एवं निवेश आदि। ये विभाग न जाने कितने विषयों से संबंधित पत्र–परिपत्र आदि जारी करते हैं। इसलिए बैंकिंग साहित्य में संदर्भों के स्तर पर विभिन्नता पाई जाती है। यदि अनुवादक को इन विषयों और संदर्भों का बोध नहीं होगा तो वह अपने अनुवाद कार्य के साथ न्याय नहीं कर पाएगा।

अनुवादक की भाषा की अभिव्यक्ति अच्छे स्तर की होने के बावजूद विषय की पर्याप्त जानकारी के अभाव में चूक होने की संभावना बनी रहती है। इसके साथ–साथ उसे संदर्भ का भी विशेष ध्यान रखना होता है। केवल शब्दकोश का सहारा लेकर अनुवाद करना हमेशा सार्थक नहीं होता। यह संदर्भ के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए। इसके लिए जरूरी होता है कि मूल की आंतरिक भावना को आत्मसात किया जाए, तभी समतुल्य वांछित शब्द मिल पाता है। विषय का अल्प ज्ञान होने से 'stale cheque' का अनुवाद "बासी चेक", 'retired bill' का "सेवानिवृत्त बिल", 'capital expenditure' का "राजधानी व्यय", 'bad debt' का "बुरा ऋण", 'face value' का "चेहरा मूल्य", 'bull and bear' का "सांड और भालू", 'speed money' का "गति मुद्रा", 'sundry debtor' का "सुंद्री ऋणी", 'snap audit' का "फोटो लेखा–परीक्षा",

'window dressing' का "खिड़की सजावट/अलंकरण", 'seed money' का "बीज धन", 'character of security' का "प्रतिभूति का चरित्र" हो जाना सहज–स्वाभाविक होगा। दूसरी ओर, यदि अनुवादक को सामान्य बैंकिंग का अच्छा ज्ञान है तो वह इनके संदर्भगत अर्थ को समझते हुए इनका अनुवाद क्रमशः "गतावधि चेक", "छुड़ाए गए बिल", "पूँजीगत व्यय", "अशोध्य ऋण", "अंकित मूल्य", "तेजड़िया और मंदड़िया", "रिश्वत", "विविध देनदार", "अकस्मात् लेखा–परीक्षा", "ऊपरी दिखावा", "प्रारंभिक धन (नए उद्यम की स्थापना में लगाया जाने वाला धन)", "प्रतिभूति का स्वरूप" ही करेगा। अनुवादक के लिए विषय एवं संदर्भ बोध को रेखांकित करने वाला निम्नलिखित वाक्य और उसका हिंदी अनुवाद देखिए :

मूल : 'Branches are required to clear off all the arrears so that the same should be declared arrear-free by the annual closing.'

अनुवाद: "शाखाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे सभी बकाया कार्यों का निपटान कर लें ताकि वार्षिक लेखाबंदी तक उन्हें बकाया मुक्त घोषित कर दिया जाए।"

उक्त हिंदी अनुवाद में यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि "बकाया कार्यों का निपटान" का क्या अर्थ है। इसका सही अर्थ–संदर्भ है – "बही मिलान अद्यतन सुनिश्चित करना"। यदि इस अर्थ–संदर्भ का ध्यान रखकर अनुवाद किया जाए तो वह मूल में निहित आशय एवं तथ्य को पूरी तरह से और सहज रूप से संप्रेषित करेगा। इस आधार पर उक्त वाक्य का अनुवाद होगा – "शाखाओं से अपेक्षित है कि वे समस्त बहियों का अद्यतन मिलान सुनिश्चित करें ताकि वार्षिक लेखाबंदी तक उन्हें बकायामुक्त घोषित कर दिया जाए।"

19.3.3 पाठक वर्ग का ध्यान रखना

यहाँ प्रयुक्त 'पाठक' स्वयं में व्यापक अर्थ–संदर्भ लिए हुए है। यह वर्ग, केवल लिखित रूप में उपलब्ध अनूदित पाठ का पाठक मात्र नहीं है। इसे हम 'प्रयोक्ता वर्ग' अथवा 'उपयोक्ता वर्ग' भी कह सकते हैं।

विषय के अनुकूल अनुवाद होने पर भी वह तब तक उपयोगी सिद्ध नहीं होता जब तक कि वह पाठक के समझने लायक न हो। बैंकिंग कार्य–व्यवहार का सीधा संबंध जन–सामान्य से होने के कारण अनुवादक के लिए यह भी जरूरी हो जाता है कि वह जनता के भाषायी ज्ञान के आम स्तर को ध्यान में रखे ताकि लोगों को अपना काम करने–कराने में मुश्किल न हो। इसलिए जरूरी है कि बैंकिंग साहित्य और विशेष तौर पर जन–सामान्य से संबंधित बैंकिंग साहित्य में सहज–सरल भाषा प्रयुक्त की जाए। उसमें कथ्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति होनी चाहिए। अनुवादक को अपनी भाषिक अभिव्यक्ति क्षमता, बैंकिंग विषयक ज्ञान और संदर्भ सापेक्षता के आधार पर कथ्य को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना होता है। इसके लिए उसे लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार वाक्य–रचना करनी चाहिए। जैसे, अनुवादक को यह ध्यान रखना होगा कि हिंदी में छोटे–छोटे वाक्यों की रचना की जाए। हम संक्षेप में यह कह सकते हैं कि अनुवाद से अनूदित सामग्री में सहजता और मूल कथ्य की रक्षा की अपेक्षा होती है।

19.4 बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियाँ

आम तौर पर यह मान लिया जाता है कि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना उस व्यक्ति के लिए कोई कठिन कार्य नहीं है, जिसका दोनों भाषाओं पर अधिकार हो,

विषय एवं संदर्भ का बोध हो और वह पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करे। लेकिन यह सरल कार्य नहीं है। अपनी इन क्षमताओं के बावजूद अनुवादक को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बैंकिंग साहित्यानुवादक भी इससे अछूता नहीं है। पश्चिम की देन वर्तमान बैंकिंग व्यवस्था में भाषा–प्रयोग के स्तर पर एक बनाया–बनाया रूप आज भी चला आ रहा है। शुरू से ही अंग्रेजी में सारा काम किया जा रहा है। बैंकिंग कामकाज हिंदी में करने के लिए अनुवाद का जो सहारा लिया गया, वह अब द्विभाषिक नीति के चलते अनिवार्य बन चुका है। इस स्थिति में बैंकिंग अनुवाद संबंधी जिन चुनौतियों का सामना अनुवादक करता है, वे इस प्रकार हैं – उपयुक्त शब्द चयन की चुनौती, सामान्य प्रतीत होने वाले शब्दों का अनुवाद, एकरूपता का अभाव, पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग, विशिष्ट शब्दों–अभिव्यक्तियों का अनुवाद, वाक्य–रचना संबंधी समस्या, संक्षिप्ताक्षरों का अनुवाद, और अभिव्यक्ति शैली की चुनौती।

19.4.1 उपयुक्त शब्द चयन की चुनौती

अनुवाद के दौरान, मूल सामग्री में कुछ ऐसे शब्द भी प्रयुक्त हुए देखे जा सकते हैं, जिनके लिए लक्ष्य भाषा में एक से अधिक पर्याय हों। इस प्रकार के शब्दों के लिए अनुवादक को बड़ी सावधानी से पर्याय–चयन करना चाहिए। पर्याय चयन करते समय इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए कि कौन–सा पर्याय लक्ष्य भाषा में उपयुक्त एवं सटीक अर्थ की प्रतीति करा रहा है। हालाँकि सभी पर्याय समान अर्थ की अभिव्यंजना नहीं कराते हैं क्योंकि उनकी अर्थच्छायाओं में सूक्ष्म अंतर होता है। अनुवादक में अर्थछायाओं के इस सूक्ष्म अंतर की बारीकी को समझने–पहचानने की क्षमता होनी चाहिए। उसे विषय–संदर्भ के अनुरूप उपयुक्त शब्द का चयन करते हुए अनुवाद में प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे, बैंकिंग में 'credit' शब्द का "जमा", "साख", "ऋण", और "श्रेय" के अर्थों में प्रयुक्त होता है। किंतु इनके प्रयोग क्षेत्र निर्धारित हैं। जब 'payee's account credited' वाक्यांश में 'credit' शब्द आता है तो उसका अनुवाद "आदाता के खाते में जमा किया" होगा। किंतु, 'letter of credit' का अनुवाद "साखपत्र" होगा। इसी प्रकार, 'credit proposal of M/s Bhatia & Co. is under consideration.' वाक्य में प्रयुक्त 'credit' शब्द "ऋण" के अर्थ का वाचक है (मैसर्ज भाटिया एंड कंपनी का ऋण प्रस्ताव विचाराधीन है।) वहीं, 'The credit of such a nice work goes to Mr. Gitesh.' वाक्य में 'credit' का अर्थ "श्रेय" है। (इतने अच्छे कार्य का श्रेय श्री गीतेश को जाता है।)

इसी संदर्भ में physical, open, fast, official, natural, live, current, flat, discharge, dead, blanket, key, hard, clean, green, blue, red, gray, white आदि शब्दों से बनने वाले शब्द–युग्म उल्लेखनीय हैं। इन शब्दों के शाब्दिक अर्थ और बैंकिंग–व्यावसायिक क्षेत्र से संबंधित अर्थों में बहुत अंतर पाया जाता है। इनमें से अगर हम 'physical' शब्द को ही देखें तो हम इसका अर्थ "भौतिक" लेते हैं, वहीं 'physical assets' के लिए "भौतिक/गोचर परिसंपत्तियाँ" शब्द प्रयुक्त किया जाता है, 'physical verification' के लिए "प्रत्यक्ष सत्यापन" तथा 'physical target' के लिए "वास्तविक लक्ष्य"। इसी प्रकार, 'open' से बनने वाले शब्द–युग्मों को उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है। 'open cheque' (अरेखित चैक), 'open credit' (गारंटी–रहित ऋण), 'open delivery' (खुली सुपुर्दगी), 'open market' (खुला बाजार), 'open ticket' (अनियत तारीख का टिकट), 'open shop' (संघमुक्त कंपनी), 'open policy' (मुक्त नीति), 'open prices' (प्रस्तावित कीमत), 'open market' (खुली

अर्थव्यवस्था) – शब्द युग्मों में 'open' शब्द की अर्थच्छायाएँ अलग–अलग हैं। एक और शब्द 'fast' को भी उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है जिससे मिलकर बने शब्द–युग्म एवं उनकी अर्थछायाएँ इस प्रकार हैं – 'fast buck' (आसान मुद्रा), 'fast growing sector' (तेजी से उभरते क्षेत्र), 'fast market' (तीव्र बाजार, शीघ्र विक्रेय माल बाजार), 'fast tract facility' (शीघ्र निपटान सुविधा, तुरंत/त्वरित कार्रवाई सुविधा)।

अगर पर्याय प्रयोग के संदर्भ की ओर ध्यान न दिया जाए तो अनुवाद गलत हो सकता है। जैसे, 'economic sanctions' के लिए "आर्थिक मंजूरियाँ" लिख देना, जबकि सही पर्याय है – "आर्थिक प्रतिबंध"। इसी प्रकार, 'small savings' के लिए "लघु बचत", 'hard cash' के लिए "कठोर मुद्रा", 'individual pay record' के लिए "वैयक्तिक वेतन रिकॉर्ड", 'hush money' के लिए "निस्तब्ध धन", 'quoted shares' के लिए "उद्धृत शेयर", 'hard cash' के लिए "कठोर मुद्रा", या 'break even point' के लिए "चरम बिंदु" लिख देना। अनुवादक को मूल में व्यंजित अर्थ को लक्ष्य भाषा में स्पष्टता प्रदान करने के लिए उपयुक्त पर्याय–चयन करना चाहिए। इस आधार पर वह उक्त शब्दों के लिए, क्रमशः, "अल्प बचत", "नकदी/नकद राशि" "अलग–अलग कर्मचारियों का वेतन रिकॉर्ड", "मुँह भराई/मुँह बंद रखने के लिए दिया गया धन", "उद्धृत भाव वाले शेयर", "नकदी, नकद राशि" और "लाभालाभ–स्थिति" का प्रयोग करेगा।

बैंकिंग के क्षेत्र में 'cheque', 'draft', 'debenture', 'overdraft', 'counter', 'commission', 'passbook', 'voucher', 'bill', 'form', 'bond', 'note', 'ledger', 'permit', 'logbook', 'debit', 'credit', 'license' आदि अंग्रेजी के अनेक ऐसे शब्द हैं जो दैनिक कामकाज में अधिकाधिक प्रयोग आते हैं। इस प्रकार के शब्दों को प्रत्येक व्यक्ति इन्हीं रूपों में आसानी से समझ लेता है। इसलिए इस प्रकार के अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद करने का प्रयास अनावश्यक ही सिद्ध होगा। इसलिए इन्हें लिप्यंतरित रूप में (अर्थात क्रमशः "चैक", "ड्राफ्ट", "ओवर ड्राफ्ट", "काउंटर", "कमीशन", "पासबुक", "वाउचर", "बिल", "फार्म", "बांड", "नोट", "लेजर", "परमिट", "लॉगबुक", "डेबिट", "क्रेडिट", "लाइसेंस") ही प्रयुक्त किया जाना अधिक व्यावहारिक होगा।

बैंकिंग में संख्याओं से शुरू होने वाले शब्द–प्रयोग भी किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, '24x7 banking' और '2G Spectrum' आदि। अनुवादक को यह ध्यान में रखना होगा कि इस प्रकार के संख्याओं वाले शब्दों के लिए हिंदी में कौन से शब्द उपयुक्त हैं। वैसे, भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी शब्दावली में इनके हिंदी पर्याय दिए हुए हैं। ये हैं – "रात दिन सात दिन बैंकिंग, 24x7 बैंकिंग" और "2 जी स्पेक्ट्रम"। वहीं, 'narrow money' के द्योतक संक्षिप्ताक्षर 'M1' के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की "बैंकिंग शब्दावली" में "एम. 1 (= संकीर्ण मुद्रा)" समतुल्य दिया हुआ है। इसी प्रकार, 'broad money' के द्योतक संक्षिप्ताक्षर 'M3' के लिए "बैंकिंग शब्दावली" में "एम.3 (= व्यापक मुद्रा)" समतुल्य दिया हुआ है।

उपयुक्त शब्द–चयन के अभाव में अनुवाद में अर्थ के अनर्थ होने की संभावनाएँ बनी रहती हैं। इसलिए अर्थ–ध्वनि की परिशुद्धता सुनिश्चित करते हुए शब्द–चयन या संदर्भ के अनुसार उपयुक्त पर्याय चयन अनुवादक के लिए बहुत जरूरी होता है।

19.4.2 सामान्य प्रतीत होने वाले शब्दों का अनुवाद

बैंकिंग साहित्य में कई ऐसे शब्द भी देखने को मिल जाते हैं, जो सामान्य प्रतीत होते हैं। किंतु, उनका अर्थ सामान्य न होकर विशिष्ट होता है। उदाहरण के लिए, 'fate'

शब्द को देखा जा सकता है, जिसका सामान्य अर्थ है – "भाग्य", "भविष्य"। परंतु बैंकिंग जगत में इस शब्द का प्रयोग चैक या बिल के भुगतान/निपटान/समाशोधन की स्थिति के बारे में जानने के लिए किया जाता है। जैसे, 'advise fate of bills' का अर्थ "बिलों का भविष्यफल/भाग्य सूचित करें" न होकर "बिलों की वसूली सूचना देने" से है।

बैंकिंग जगत में केवल शब्द स्तर पर ही नहीं, बल्कि शब्द समूह के स्तर पर भी अर्थ संबंधी भ्रांतियाँ हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, 'window' शब्द को लिया जा सकता है, जिसका कोशगत अर्थ "खिड़की" है। लेकिन यदि 'This is a unique window available only to urban co-operative bank' वाक्य देखा जाए तो यहाँ 'window' का "खिड़की" न होकर "सुविधा" से है – "ऐसी सुविधा जो केवल शहरी सरकारी बैंकों को उपलब्ध है"। इसी प्रकार 'window dressing' शब्द का यदि समतुल्य पर्याय "खिड़की" के आधार पर अनुवाद किया जाए तो इसका अनुवाद "खिड़की की सजावट" होगा, जो स्वयं में हास्यास्पद लगेगा। वस्तुतः 'window dressing' शब्द स्वयं में एक बैंकिंग–वाणिज्यिक अवधारणा को लिए हुए है, जिसका अर्थ होता है – आँकड़ों को बढ़ा–चढ़ाकर दर्शाना। इसलिए अनुवादक को यह ध्यान रखना होगा कि वह केवल शब्द का पर्याय न देकर उसके अर्थ को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करे। सामान्य प्रतीत होने वाले कुछ अन्य शब्द अथवा शब्द–समूह हैं – 'retirement (of bills)', 'bad (debts)', 'dead (money)', 'kite fly', 'suspense (account)', 'blanket (permission)', 'blue chip', 'acid test (ratio)', '(bill of) health', 'black (economy)', 'break-up (value)', 'current (account)', 'closed (shop)', 'house keeping (function)', 'golden hand shake scheme', 'green (money)', 'naked (debenture)', 'hot (card)', 'hot (money)', 'paper (profit)', 'ship's husband', 'open (cheque)', 'soft window (loan)', 'prime (cost)', 'demand (pull)', 'smart (money)', 'speed (money)' 'snap (audit)'।

19.4.3 एकरूपता का अभाव

बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में शब्दों के स्तर पर एकरूपता का अभाव भी चुनौती लिए हुए होता है। हालाँकि भारतीय रिजर्व बैंक ने "बैंकिंग शब्दावली" तैयार की हुई है और बैंकों में हिंदी में अनुवाद या मूल लेखन कार्य करने में इससे काफी मदद मिलती है। लेकिन, सभी बैंक इसके शब्दों को ज्यों का त्यों प्रयोग नहीं करते। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय की एकरूपता की समस्या को देखा जा सकता है, जैसे, 'deposit' शब्द के लिए कोई "जमा" शब्द को प्रयुक्त करता है तो कोई "निक्षेप" का। 'crop loan' के लिए "फसल उधार" और "शस्य ऋण" शब्द प्रयोग हो या फिर, 'hypothecation' शब्द को देखा जा सकता है जिसके लिए कोई "दृष्टिबंधक" शब्द को व्यवहार में लाता है तो कोई "आडमान" को। "आडमान" तमिल भाषा से लिया गया शब्द है। कई बार एक ही बैंकिंग कार्यालय के पत्रों/परिपत्रों में भी अलग–अलग पर्यायों का प्रयोग किया हुआ होता है। जैसे, 'subsidy' शब्द के समतुल्य "अनुदान", "आर्थिक सहायता", "उपदान", "परिदान", "इमदाद" आदि शब्दों का प्रयोग नजर आता है। इसी प्रकार, 'fixed deposit' शब्द–युग्म के लिए कहीं "सावधि जमा" व्यवहृत होता है तो कहीं "मियादी जमा"। वहीं, 'assest' के लिए "आस्ति" और "परिसंपत्ति" तथा 'recovery plan' के लिए "समुत्थान योजना" एवं "प्रत्युत्थान योजना" आदि भी एकरूपता के अभाव को दर्शाते हैं। इसी संदर्भ में 'regional office' शब्द–युग्म को भी देखा जा सकता है जिसके लिए कहीं "क्षेत्रीय कार्यालय" लिखा

जाता है तो कहीं "प्रादेशिक कार्यालय"। कहने का अभिप्राय यह है कि शब्दावली के स्तर पर एकरूपता बनाए रखना बहुत आवश्यक है। हालाँकि बहुत अधिक क्लिष्ट एवं संस्कृतनिष्ठ शब्दों से भी बचना चाहिए।

19.4.4 पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग

इस इकाई के भाग 19.2 में आप यह पढ़ चुके हैं कि बैंकिंग साहित्य के अनुवादक को पारिभाषिक शब्दावली का बड़ी सावधानी और सतर्कता से प्रयोग करना होता है। इसके लिए उसे पारिभाषिक शब्दावली और विशेष तौर पर बैंकिंग शब्दावली की जानकारी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'security' शब्द का सामान्य अर्थ "सुरक्षा" चलन में है, किंतु बैंकिंग कामकाज के संदर्भ में इस शब्द के लिए हिंदी में तकनीकी तौर पर समतुल्य "प्रतिभूति" अथवा "जमानत" शब्द सुनिश्चित है। अनुवादक को इसका ध्यान रखना चाहिए। इस आधार पर 'Security documents must be completed in all respects, before sanctioning the loan.' का अनुवाद इस प्रकार हो सकता है – "ऋण संस्वीकृत करने से पूर्व प्रतिभूति प्रलेख समग्र रूप से पूरे करवाए जाएँ।" इसी प्रकार, 'recovery', 'realisation', 'collection' शब्दों को देखा जा सकता है जिनके लिए हिंदी में पारिभाषिक शब्द मोटे तौर पर "वसूली" है। किंतु अंग्रेजी के इन सभी शब्दों का मूल अर्थ एक होने के बावजूद इनकी अर्थछाया में अंतर है। इसलिए अनुवादक "वसूली" तथा "उगाही" शब्द–प्रयोग करके काम चलाता है। इस तरह के प्रयास का मूल आधार शब्द विशेष के अर्थ की सूक्ष्मता को उद्घाटित करना होता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनुवादक "प्रोक्ति" (Discourse) का ही सहारा लेता है। इसका अर्थ यह है कि अनुवादक पूर्वक्रम में व्यक्त कथ्य का सहारा लेकर यथासंभव अर्थ को स्पष्ट करता है। इसी प्रकार 'cost', 'price', 'charge', 'surcharge' शब्द देखे जा सकते हैं जिनकी अर्थछाया पर विचार जरूरी है। हालाँकि इन शब्दों का मूल अर्थ "मूल्य", अथवा "प्रभार" है किंतु पारिभाषिक संदर्भ में इनके प्रयोग–क्षेत्र निर्धारित हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि 'value' शब्द के स्थान पर 'charge' अथवा 'price' का प्रयोग नहीं किया जा सकता, 'surcharge' के स्थान पर 'charge' शब्द प्रयुक्त करने से अर्थांतर हो जाएगा और 'cost' अथवा 'price' को एक ही अर्थ–संदर्भ में प्रयुक्त नहीं किया जाएगा। यदि ऐसा किया जाता है तो फिर "क्रय कीमत" को व्यक्त करने वाले 'cost price' शब्द–युग्म का क्या अनुवाद किया जाएगा? इसीलिए 'cost', 'price', 'charge', 'surcharge' शब्दों के लिए हिंदी में क्रमशः "लागत", "प्रभार", "अधिभार", और "मूल्य" पारिभाषिक शब्द सुनिश्चित किए गए हैं।

बैंकिंग साहित्य स्वयं में तकनीकी स्वरूप वाला होता है, इसलिए इसका शब्दानुवाद किया जाता है। तकनीकी होने के कारण बैंकिंग साहित्य मुख्यतः प्रायः पारिभाषिक शब्दावली केंद्रित होता है। शब्दानुवाद से मूल भाषा का भाव–सौंदर्य, व्यंजित अर्थ और वाक्य–विन्यास अनुवाद में खंडित–विखंडित हो जाते हैं। स्थिति यह भी हो जाती है कि मूल भाषा का कथ्य अनुवाद में सुरक्षित नहीं रहता। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के निम्नलिखित पद और उनके शब्दानुवाद एवं शुद्ध अनुवाद देखिए :

अंग्रेजी पद	शब्दानुवाद	शुद्ध अनुवाद
area under crops	फसलों के नीचे क्षेत्र	फसल क्षेत्र
bad debt	बुरा ऋण	डुबंत ऋण / अशोध्य ऋण

broken account	टूटा हुआ खाता	खंडित खाता
face value	चेहरा मूल्य	अंकित मूल्य
floting debt	तैरता हुआ ऋण	अस्थायी / अल्पकालीन ऋण
hard cash	कड़ी / ठोस नकदी	दुर्लभ मुद्रा
hard goods	कड़ी / ठोस वस्तुएँ	टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएँ
health code	स्वास्थ्य संहिता	ऋण स्थिति कूट
kite bill	पतंग बिल	निभाव हुंडी
soft goods	नरम / हलकी / मंद / मृदु वस्तुएँ	गैर–टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएँ
speed money	गति मुद्रा	रिश्वत
state run bank	राज्य–चालित बैंक	सरकारी बैंक
strike price	हड़ताल कीमत	नियत भाव
window envelop	खिड़की लिफाफा	पतादर्शी लिफाफा

19.4.5 विशिष्ट शब्दों–अभिव्यक्तियों का अनुवाद

बैंकिंग साहित्य के प्रकारों पर चर्चा करते समय इकाई–18 के भाग 18.5 में यह उल्लेख किया जा चुका है कि यह साहित्य विविधता लिए हुए होता है। एक ओर, जहाँ यह बैंकिंग प्रक्रिया से संबंधित होता है तथा दूसरी ओर, ग्राहकों या ग्राहक सेवा से संबंधित। किंतु इतना तो अवश्य ही है कि यह स्वयं में तकनीकी प्रकृति का होता है। इसमें विशिष्ट प्रकार के शब्दों और अभिव्यक्तियों का प्रयोग देखने को मिलता है। शब्दों अथवा अभिव्यक्तियों की यह विशेषता बैंकिंग अनुवाद में बाधा उत्पन्न करती है। अगर अनुवादक में उन शब्दों–अभिव्यक्तियों में छिपे अर्थ को समझने और उसका भाव ग्रहण कर अनुवाद करने की क्षमता नहीं है और वह मात्र शब्दानुवाद का सहारा लेकर अनुवाद कर देगा तो अनूदित पाठ निरर्थक होगा। बल्कि उससे कभी–कभी अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। अनुवादक को शब्द के स्थान पर अर्थ–भाव का अनुवाद करना चाहिए ताकि मूल विषय–वस्तु पाठक को स्पष्ट हो सके। उसे ध्यान रखना चाहिए कि अन्य सामग्री की तुलना में यह सामग्री मूलतः आम लोगों के लिए है। इसलिए उसके अनुवाद में जन–सामान्य की भाषा का प्रयोग किया जाए।

बैंकिंग सामग्री के अनुवाद में अनुवादक को विशिष्ट शब्दों–अभिव्यक्तियों का प्रसंग के अनुसार भावानुवाद करना जरूरी हो जाता है। उदाहरण के लिए 'hoarded' शब्द को देखा जा सकता है, जो 'Rupees are hoarded against retired life.' वाक्य में विशिष्ट अर्थ का व्यंजक है। इसलिए इसका भावानुवाद (रुपए सेवानिवृत्त जीवन में काम आने के लिए जमा किए जाते हैं।) करना ही उपयुक्त है। इसी प्रकार, 'support' शब्द को देखा जा सकता है, जो 'Interest income was his only support.' वाक्य में जिस विशिष्ट अर्थ को व्यक्त कर रहा है। उसका भावानुवाद "ब्याज की आय / आमदनी उसके गुजारे का एकमात्र साधन थी।" करना ही उपयुक्त है।

इसी प्रकार, 'rainy days' विशिष्ट शब्द–युग्म को यदि बिना संदर्भ को जाने ही अनूदित कर दिया जाए तो वह "बारिश के दिन" हो सकता है। इस शब्द–युग्म वाले वाक्य 'Gold is hoarded against rainy days.' अभिव्यक्ति का अनुवाद "सोना वर्षा के दिनों में काम आने के लिए जमा किया जाता है।" किया जा सकता है। किंतु यहाँ 'rainy days' "बुरे वक्त" के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। इसलिए इसका सही अनुवाद होगा – "सोना बुरे वक्त/दिनों में काम आने के लिए जमा किया जाता है।" इसी प्रकार 'fate' शब्द को देखा जा सकता है, जो "भविष्यफल" का सूचक न होकर बैंकिंग साहित्य में वसूली–सूचना आदि का द्योतक हो जाता है। जैसे, 'Please advise about the fate of bills. वाक्य में आए 'fate' शब्द को देखिए। इस वाक्य का हिंदी अनुवाद – "कृपया उगाही के लिए भेजे गए बिलों की वसूली–सूचना दें।" किया जाएगा। इसी प्रकार, 'To give a blank cheque' को देखा जा सकता है जिसका अर्थ "खुली छूट देना" है, न कि "कोरा चैक देना"।

स्पष्ट है कि विशिष्ट शब्द और अभिव्यक्तियाँ बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में चुनौतियाँ खड़ी करती हैं क्योंकि इनके अर्थ कई स्थानों पर प्रचलित लोक–व्यवहार और स्थानीय मुहावरों पर आधारित होते हैं जो समाज–विशेष में प्रचलित होते हैं।

19.4.6 वाक्य–रचना संबंधी समस्या

अब तक किए अध्ययन के आधार पर आपको यह मूलभूत बोध हो चुका है कि हर भाषा की अपनी–अपनी भाषिक संरचना होती है, अपना व्याकरण होता है, अपनी अभिव्यक्ति शैली होती है। इसका अभिप्राय यह है कि वाक्य–रचना संबंधी व्याकरणिक व्यवस्था में भी प्रत्येक भाषा के अपने–अपने नियम होते हैं। वाक्य–रचना की इस भिन्नता को स्पष्ट करने के लिए हम अंग्रेजी और हिंदी में वाक्य के अवयवों के क्रम का उल्लेख कर सकते हैं। हिंदी में वाक्य–रचना का क्रम "कर्ता, कर्म, क्रिया" होता है, जबकि अंग्रेजी में यह क्रम है – "कर्ता, क्रिया, कर्म"। वहीं, संस्कृत भाषा में कर्ता, कर्म और क्रिया को कहीं भी रखते हुए वाक्य–रचना की जा सकती है। इस प्रकार, अगर हम देखें तो वाक्य–रचना के स्तर पर भी अंग्रेजी और हिंदी भाषाओं में भिन्नता है। लंबे–लंबे वाक्य और कर्मवाच्य अंग्रेजी भाषा की प्रकृति है। इसमें अल्प–विराम (coma) या that/which लगाकर बहुत लंबे–लंबे वाक्य बनाए जाते हैं। विशेष तौर पर विधिक सामग्री में इसी प्रकार की वाक्य–रचना देखने को मिलती है। दूसरी ओर, हिंदी भाषा की वाक्य–रचना संबंधी प्रकृति पर विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि यह भाषा सरल वाक्यों एवं कर्तृवाच्य वाली है। हालाँकि हिंदी में संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों का प्रयोग भी मिलता है लेकिन ऐसे वाक्य भी आम तौर पर ज्यादा लंबे नहीं होते। जिस अनुवादक को इस प्रकार की भिन्नता का जितना अधिक अच्छा ज्ञान–बोध होगा, वह अनुवाद करने में उतना ही अधिक सफल हो सकता है। अनूदित सामग्री को मौलिकता का अहसास दिलाने में वाक्य–रचना पर अनुवादक के अच्छे अधिकार की विशेष भूमिका रहती है। वाक्य–रचना के असंगत होने पर भाषा का सौंदर्य नष्ट हो जाता है।

अनुवादक अक्सर मूल की वाक्य–रचना शैली तक का अंधानुकरण कर लेते हैं। जैसे 'The cheques which were received, have been paid.' वाक्य का अनुवाद "जो चैक प्राप्त हुए थे, उनका भुगतान कर दिया गया है।" इस प्रकार के अंधानुकरण से बचना चाहिए क्योंकि इस अनूदित वाक्य पर मूल की वाक्य–रचना शैली पूरी तरह से छाई हुई है। इसके स्थान पर यदि हिंदी की प्रकृति के अनुसार अनुवाद "प्राप्त हुए

सभी चैकों का भुगतान कर दिया गया है" किया जाए तो कथ्य की स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति हो जाएगी और वह सहज रूप से संप्रेष्य भी होगा।

मूल की वाक्य–रचना शैली के अनुकरण में वाक्य की लंबाई का ध्यान न रखना भी शामिल है। जैसे, लंबे–लंबे वाक्य अंग्रेजी भाषा की प्रकृति है, जबकि हिंदी में छोटे–छोटे वाक्यों की रचना की जाती है। यदि अंग्रेजी के लंबे–लंबे वाक्यों के हिंदी में उसी आकार–प्रकार में अनुवाद कर दिया जाए तो वे दुरूह और जटिल हो जाएँगे। ऐसी स्थिति में मूल वाक्य को एक से अधिक वाक्यों में तोड़कर अनूदित करना चाहिए। इससे कथ्य की अभिव्यक्ति स्पष्ट, सरल एवं सहज हो जाती है। हाँ, इस प्रकार के प्रयास में अनुवादक को यह ध्यान रखना होगा कि मूल का भाव–कथ्य अनुवाद में आहत न हो, वह बना रहे। उदाहरण के लिए,

मूल : The public sector banks may evolve their own schemes of Hindi training either individually or collectively and should themselves decide the mode of training, aiming at equipping the employees with functional Hindi which could be used by them in the working of the banks.

अनुवाद : सरकारी क्षेत्र के बैंकों को अकेले या सामूहिक रूप से हिंदी प्रशिक्षण की अपनी योजनाएँ तैयार करनी चाहिए। उन्हें स्वयं ही प्रशिक्षण के तरीके के बारे में निर्णय करना चाहिए। प्रशिक्षण का लक्ष्य यह होना चाहिए कि कर्मचारियों को ऐसी कामकाजी हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाए, जिसका वे बैंकों के कामकाज में उपयोग कर सकें।

हालाँकि यह सही है कि सामान्य प्रकृति के बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में अनुवादक इस प्रकार की थोड़ी–बहुत स्वतंत्रता ले सकता है किंतु विधिक प्रकृति के बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में यह स्वतंत्रता नहीं होती। ऐसी सामग्री के अनुवाद के समय वह नपे–तुले शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग के लिए बाध्य होता है। इस बाध्यता के कारण उसका अनुवाद भले ही नीरस और शाब्दिक प्रतीत हो, लेकिन इसके बावजूद ऐसी सामग्री का अपना विधिक महत्व होता है।

स्रोत भाषा की वाक्य–रचनागत छाया का ही परिणाम होता है कि हिंदी अनुवाद में अधिकांशतः कर्तृवाच्य के स्थान पर कर्मवाच्य का प्रयोग किया जाता है। हिंदी में यदि यह कहा जाए कि "आपके द्वारा भेजा गया पत्र मिला" तो वाक्य कर्मवाच्य वाला होगा और यदि "आपका पत्र मिला" कहा जाए तो वह कर्तृवाच्य होगा। अंग्रेजी की इस वाक्य–रचनागत छाया को जानने के लिए हम अंग्रेजी के 'The Vikas Puri branch of ……. Bank was inaugurated by the General Manager.' वाक्य का उदाहरण लेते हैं जिसका अनुवाद "..... बैंक की विकासपुरी शाखा का उद्घाटन महाप्रबंधक द्वारा किया गया।" करना और विशेष तौर पर "द्वारा" शब्द का प्रयोग अंग्रेजी की वाक्य–रचना के अनुकरण के कारण है। कर्मवाच्य में वाक्य–रचना करना अंग्रेजी भाषा की प्रकृति है लेकिन हिंदी भाषा की प्रकृति कर्तृवाच्य वाली है। इसलिए हिंदी की प्रकृति को ध्यान में रखकर वाक्य–रचना करना जरूरी है। तभी अनुवादक इस प्रकार के वाक्य का ".....बैंक के महाप्रबंधक ने बैंक की विकासपुरी शाखा का उद्घाटन किया।" अनुवाद करेगा। ऐसा अनुवाद हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुरूप तथा सहज, प्रवाहमयी और सरलता से समझने आने वाला होगा। हालाँकि कभी–कभी "द्वारा" जैसे प्रयोग से बचा नहीं जा सकता। जैसे, 'The committee constituted by

the General Manager recommended that…… .' वाक्य का अनुवाद "महाप्रबंधक द्वारा गठित समिति ने संस्तुति/सिफारिश की है कि….. "

तकनीकी स्वरूप का होने के कारण बैंकिंग साहित्य का सामान्यतः शब्दानुवाद किया जाता है। लेकिन शब्दानुवाद के कारण मूल भाषा का भाव–सौंदर्य, व्यंजित अर्थ और वाक्य–विन्यास अनुवाद में खंडित–विखंडित हो जाते हैं। शब्दानुवाद के कारण होने वाली अशुद्धता अथवा अटपटेपन को वाक्य के स्तर पर भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'please arrange to provide….' का "कृपया..... उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें।" अनुवाद अटपटा प्रतीत होता है। इसके स्थान यदि भावानुवाद का सहारा लिया जाए तो अनूदित पाठ बोधगम्य बन जाएगा। जैसे, उक्त वाक्य का भावानुवाद "कृपया..... उपलब्ध कराएँ।" लेकिन, भावानुवाद के धरातल पर उतरना और वाक्य–रचना के स्तर पर थोड़ी–बहुत स्वतंत्रता आदि केवल सामान्य प्रकृति के बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में लेना ही संभव है, विधिक प्रकृति के बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में नहीं। जैसा कि आप जानते ही हैं कि विधिक साहित्य की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है और अनुवादक को अपने अनुवाद में उसे बनाए रखना होता है। विधि शब्दावली के साथ–साथ नपे–तुले शब्द और वाक्य–प्रयोग विधि अनुवाद की इस विशिष्ट प्रकृति को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

शब्दानुवाद की प्रवृत्ति के कारण अंग्रेजी के पदक्रम और अल्प–विराम (coma), निर्देशक चिह्न (dash), अर्ध–विराम (semi-colon), उद्धरण चिह्न (quotation mark) जैसे विरामादि चिह्नों का क्रम तक ज्यों का त्यों रख दिया जाता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित अंग्रेजी वाक्य और उसका हिंदी अनुवाद देखिए

मूल : With a view to help the small farmers generally, banks are not insisting any security for crop loans upto Rs. 5,000/- except hypothecation of crops to which loan is granted.

अनुवाद : छोटे किसानों की सहायता करने के उद्देश्य से प्रायः बैंक 5000.00 रुपए तक के फसल ऋण के लिए किसी प्रतिभूति पर जोर नहीं देते, सिवाय फसलों के दृष्टिबंधन के, जिनके लिए ऋण प्रदान किया जाता है।

उक्त अनुवाद में मूल के पदक्रम और विरामादि चिह्नों तक के क्रम को ज्यों का त्यों रखा गया है। हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार, एक ही वाक्य में इस प्रकार के विरामादि चिह्न भाव को भली प्रकार से संप्रेषित करने में बाधक बनते हैं। इसलिए उक्त अनुवाद को मौलिकता का रूप देने के लिए हिंदी वाक्य इस प्रकार बनाया जा सकता है – "छोटे किसानों की सहायतार्थ बैंक प्रायः 5000/– रुपए तक के फसल ऋण के लिए फसलों के दृष्टिबंधन के अलावा अन्य किसी प्रतिभूति की अपेक्षा नहीं करते।" इसलिए 'His signature which appear below is duly confirmed by me.' जैसे वाक्य का अनुवाद "मैं उनके हस्ताक्षर की पुष्टि करता/करती हूँ, जो नीचे दिया गया है।" के स्थान पर यदि "नीचे किए गए उनके हस्ताक्षर की मैं विधिवत पुष्टि करता/करती हूँ।" वाक्य–रचना की जाए तो वह अनूदित पाठ में सहजता ला देगी।

वाक्य–रचना करते समय अनुवादक को शब्दों के क्रम के प्रति भी विशेष तौर पर ध्यान देना चाहिए। यदि शब्दों को गलत क्रम से रख दिया जाए तो निर्मित वाक्य भिन्न अर्थ का बोधक बन जाता है। उदाहरण के लिए, "उसने मुझे एक फूलों की सुंदर माला भेंट की।" और "उसने मुझे फूलों की एक सुंदर माला भेंट की" वाक्य देखे जा सकते हैं,

जो शब्द के क्रम के प्रति सावधानी न बरतने के कारण अलग–अलग अर्थ को व्यक्त कर रहे हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी के 'The two best books' और 'The best two books' वाक्य को देखा जा सकता है, जिसमें पहले वाक्य का अनुवाद "दो सर्वोत्तम पुस्तकें" होगा और दूसरे का "उत्तम पुस्तकों में से सर्वोत्तम दो पुस्तकें" होगा। इसी तरह, बैंकिंग से संबंधित 'Bank's scheme to eradicate poverty' वाक्य देखा जा सकता है, जिसमें शब्द–क्रम की गलती से "बैंक की गरीबी दूर करने की योजना" अनुवाद हो सकता है। इसका सही अनुवाद है – "गरीबी दूर करने की बैंक की योजना"।

अनुवादक को अनूदित वाक्य में अन्विति बनाते हुए वाक्य–रचना करनी होती है। अन्विति का अर्थ है – समुचित और परस्पर मेल। वाक्य में प्रयुक्त शब्दों अथवा पदों से वाक्य की अन्विति बनती है। वाक्य में लिंग, वचन, काल, पुरुष आदि के अनुसार विभिन्न पदों का एक–दूसरे से संबंध जुड़ता है और वाक्य संदेश को व्यक्त करने का माध्यम बनता है। वाक्य–रचना करते समय लिंग, वचन, परसर्ग, सर्वनाम, काल आदि का प्रयोग लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप किया जाना चाहिए। इससे अनूदित वाक्य मूल के प्रभाव से भी बचा रहेगा और वह स्वयं में मौलिक लेखन के स्वरूप वाला भी बन जाएगा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि मूल की वाक्य–रचना का अनुवाद की भाषा (वाक्य–रचना) पर प्रभाव न पड़े। उसे लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार वाक्य–रचना करनी चाहिए। वही अनुवाद अच्छा माना जाता है जिसमें लक्ष्य भाषा की शैली परिलक्षित की जा सके। इसके लिए उसे वाक्य–रचना प्रकिया में समान स्तरीय शब्द प्रयोग करते हुए भाषिक सौंदर्य और शैलीगत संरचना को आकर्षक बनाते हुए अर्थ को संप्रेषणीय बनाकर प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रक्रिया में भाषा की सहजता बने रहने की पूर्वापेक्षा होगी ही।

19.4.7 संक्षिप्ताक्षरों का अनुवाद

बैंकिंग संबंधी कार्य–व्यवहार में संक्षिप्ताक्षरों (abbreviations) का अपना स्थान एवं महत्व है। संक्षिप्ताक्षर, मनुष्य की प्रयत्नलाघव प्रवृत्ति को दर्शाता है। भाषा में इनके प्रयोग से श्रम और समय की बचत होती है और भाषा में निखार भी आता है। बैंकिंग संबंधी कार्य में हर रोज हजारों–लाखों संव्यवहार होते हैं, जिन्हें कम से कम समय में निपटाते हुए ग्राहकों को उत्तम एवं संतोषप्रद ग्राहक सेवा उपलब्ध कराना होता है। इसलिए बैंकिंग जगत में संक्षिप्ताक्षरों का खूब इस्तेमाल किया जाता है। बैंकिंग कामकाज में परंपरागत रूप से अंग्रेजी का ही प्रचलन रहा है, इसलिए वहाँ A/c (account), B/c (Bills for Collection),), b/d (brought down), B/E (Bill of Exchange), C/A (Current Account), C/C (Cash Credit), c/f (carried forward), cr. (credit), CRR (Cash Reserve Ratio), DD (demand draft), dr. (debit), ECS (Electronic Clearing Service), FD (fixed deposit), MF (Mutual Fund), NDB (National Development Bond), NRI (Non-Resident Indian), O/D (Overdue), RD (recurring deposit), RoT (Remittance of Treasure), SB (saving bank), Tr. (transfer), USP (Unique Selling points), VAT (Value Added Tax), ZCB (Zero Coupon Bond) आदि अनेक संक्षिप्ताक्षर आम चलन में हैं। हिंदी समानार्थक संक्षिप्ताक्षर निरूपित करने के लिए अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। हालाँकि यह सही है कि रोमन लिपि में लिखी जाने वाली अंग्रेजी भाषा की लिपि वर्ण–आधारित

(alphabetical script) है, इसलिए इसमें शब्दों के संक्षिप्ताक्षर निर्मित करना आसान है। दूसरी ओर, हिंदी आक्षरिक लिपि (syallbic script) में लिखी जाने वाली भाषा है। इसलिए अंग्रेजी की तुलना में हिंदी में संक्षिप्ताक्षर निर्माण और व्यवहार कम नजर आता है। वैसे, आजकल "बसपा", "जद", "सपा", "इंका", "माकपा", "भाजपा" आदि हिंदी संक्षिप्ताक्षर भी खूब व्यवहृत होते हुए नजर आते हैं।

हिंदी में संक्षिप्ताक्षर निर्माण संबंधी कोई विशेष व्यवस्थित प्रयास नहीं किए गए हैं, इसलिए इनके निर्माण के कोई सिद्धांत नहीं हैं। संक्षिप्ताक्षरों के उपयुक्त अनुवाद की चुनौती भी अनुवादक के समक्ष कम नहीं रहती। अनुवादक यह नहीं समझ पाता कि ऐसे संक्षिप्ताक्षरों का अनुवाद कैसे करे? क्या वह अंग्रेजी संक्षिप्ताक्षर को ज्यों का त्यों देवनागरी में लिख दे या उनके पूरे का हिंदी में अनुवाद कर दे या फिर उनके हिंदी पर्याय को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर दे। यहाँ हमें इस वास्तविकता को स्वीकार करना होगा कि लोग अंग्रेजी संक्षिप्ताक्षरों के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि उन्हें पूरे हिंदी पर्याय या उसका संक्षिप्त रूप स्वीकार तक नहीं होता। वास्तव में इस संदर्भ में मानकता का अभाव अनुवादक के लिए चुनौती है।

19.4.8 अभिव्यक्ति शैली की चुनौती

बैंकिंग साहित्य, सृजनात्मक साहित्य की भाँति विधा–केंद्रित नहीं होता। इसलिए उसमें अभिव्यक्ति शैली के अनुवाद का प्रश्न उस प्रकार नहीं उभरता, जैसा कि काव्य–कहानी जैसे सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में उठता है। बैंकिंग साहित्य के अनुवादक को "तथ्य" और "कथ्य" के प्रति विशेष ध्यान रखना होता है। इनकी लक्ष्य भाषा में ज्यों की त्यों प्रस्तुति में ही अनुवादक के प्रयास की सफलता छिपी हुई है। इसके लिए तथ्यात्मक प्रसंगों में सामान्य शब्दों का सामान्य अर्थों में और पारिभाषिक शब्दों का पारिभाषिक अर्थ में प्रयोग किया जाना चाहिए। लेकिन, इसके साथ–साथ विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली के प्रति सावधानी बरतते हुए अनुवाद करना भी अपेक्षित होता है। जैसे, अंग्रेजी में 'with regard to', 'It is needless to mention', 'laid down', 'To stick to the point', 'in any case', 'You would appreciate', 'in connection with', 'As it were', 'in favour of', 'Lately', 'at the instance of', 'At the same time', 'laid down in', 'Time and again', 'obligation to give information', 'over and over again', 'at variance with', 'By and large', 'At any rate', 'By all means', 'By any means', 'holder's right in respect of security', 'In anticipation of', 'In the first instance', 'hoarding demand for money', 'in the aggregate' , 'over and above', 'within jurisdiction', 'more or less', 'interalia', 'nothwithstanding anything to the countrary', 'with regard to' आदि प्रयोग विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली का रूप धारण कर लेते हैं।

इस प्रकार की अभिव्यक्ति शैली का अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा की प्रकृति एवं अभिव्यक्ति शैली के आलोक में अनुवाद किया जाना चाहिए। अगर इस प्रकार की अभिव्यक्तियों के मानक समतुल्य शब्द मिलते हों तो उन्हीं का प्रयोग करना चाहिए। जहाँ तक भारतीय रिजर्व बैंक की "बैंकिंग शब्दावली" का संबंध है, उसमें वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ एवं उनके हिंदी पर्यायों को संकलित करके अलग से सूचीबद्ध नहीं किया गया है। इसलिए बैंकिंग साहित्य के अनुवादक को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (सी.एस.टी.टी) की "प्रशासनिक शब्दावली" पर ही निर्भर रहना पड़ता है और रहना चाहिए भी।

19.5 बैंकिंग साहित्य का अनुवाद : अभ्यास और विश्लेषण

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो गया है कि बैंकिंग का क्षेत्र अत्यंत विशाल है। इसमें प्रयोग किए जाने फॉर्म–प्रलेख आदि हिंदी में/द्विभाषी रूप में तैयार किए जाते हैं। व्यवहार में यह देखा जाता है कि इन्हें पहले अंग्रेजी में तैयार किया जाता है और फिर उनका अनुवाद किया जाता है। इसे संपन्न करने के दौरान अनुवादक को कई प्रकार की चुनौतियों आदि का सामना करना पड़ता है। उन्हें ध्यान में रखते हुए अनुवादक अपना कार्य भली प्रकार से संपन्न करने का सार्थक प्रयास करता है। इकाई के इस भाग में बैंकिंग साहित्य के अनुवाद से संबंधित कुछ अभ्यास और उनका विश्लेषण करेंगे ताकि आपको बेहतर अनुवाद करने के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त हो जाए।

सबसे पहले, शब्दों का संदर्भ लेते हैं। अनुवादक को यह ध्यान देना चाहिए कि कई शब्द ऐसे होते हैं, जिनके अर्थ में संदर्भ के अनुसार बदलाव आ जाता है। उदाहरण के लिए, बैंकों में 'posting' शब्द को प्रयुक्त किया जाता है। इसके हिंदी पर्याय 'तैनाती', 'पद स्थापन', 'खतियाना' अथवा 'लेखा बहियों में दर्ज/प्रविष्ट करना' आदि है। अनुवादक को पाठ की विषय–वस्तु को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करना होगा। जैसे, 'Posting have been made in all the pass books.' के अनुवाद में 'प्रविष्टि' शब्द का प्रयोग करते हुए 'सभी पासबुकों में प्रविष्टियाँ कर दी गई हैं।' करना। इसी प्रकार, 'Nikhil has been posted to a rural branch of the Bank.' वाक्य के अनुवाद 'तैनाती' पर्याय का संदर्भ ग्रहण करते हुए 'निखिल को बैंक की ग्रामीण शाखा में तैनात कर दिया गया है।' अनुवाद करना। इसी प्रकार अंग्रेजी के 'float' शब्द को देखा जा सकता है जिसे लेकर बैंकिंग में कई शब्द व्यवहार में लाए जाते हैं। 'तैरना' जैसे सामान्य अर्थ को व्यक्त करने वाले इस शब्द की विभिन्न संदर्भों में अर्थ ध्यान देने योग्य हैं :

float money	:	निर्गम मुद्रा, अस्थायी मुद्रा
floating assests	:	चल या अस्थायी आस्तियाँ
floatation of company	:	कंपनी का प्रवर्तन
floatation of debentures	:	डिबेंचरों का निर्गम/जारी करना

आइए, अब बैंकिंग सामग्री के अनुवाद के कुछ नमूने देखें :

मूल : Branch will transfer two hundred rupees from my SB A/c to his Current A/c.

अनुवाद : शाखा मेरे बचत खाते से उसके चालू खाते में दो सौ रुपए हस्तांतरित करेगी।

उक्त अनूदित पाठ में 'transfer' के लिए 'हस्तांतरण' शब्द प्रयुक्त किया गया है। हालाँकि 'transfer' शब्द के लिए 'स्थानांतरण', 'हस्तांतरण' और 'अंतरण' पर्यायों में से किसी एक प्रयोग किया जा सकता था, लेकिन मूल वाक्य के संदर्भ में 'अंतरण' शब्द प्रयुक्त करना बेहतर कहा जाएगा।

मूल : Letter of credit is required for grant of loan related proposal.

अनुवाद : ऋण संबंधी प्रस्ताव के लिए श्रेय पत्र आवश्यक है।

उक्त अनूदित पाठ में 'credit' के लिए 'श्रेय' शब्द प्रयुक्त किया गया है। हालाँकि 'credit' शब्द के लिए श्रेय के अलावा 'जमा', 'ऋण' और 'साख' पर्याय भी हैं। किंतु अनुवादक को यह ध्यान देना होगा कि 'letter of credit' 'साख–पत्र' है। उल्लेखनीय यह भी अनूदित वाक्य में 'loan' के लिए भी 'ऋण' शब्द प्रयुक्त किया गया है।

आइए, अब बैंकिंग अनुवाद का अभ्यास करें। आपके समुचित अभ्यास के लिए पहले हमने मूल पाठ दिया है और उसके बाद रिक्त स्थान। आप मूल पाठ का रिक्त स्थान में अनुवाद कीजिए और उसके अपने अनुवाद की स्वयं ही जाँच कीजिए। इसके लिए हम मूल अंश का हिंदी अनुवाद भी दे रहे हैं। आप अपने अनुवाद को इस अनूदित पाठ से मिलाइए और गलतियों का पता लगाकर सुधार कीजिए। अपना अनुवाद करने से पहले इस अनुवाद को मत देखिए। यदि आप ईमानदारी से यह अभ्यास करेंगे तो अनुवाद अच्छी तरह सीख सकेंगे।

मूल :

- Issue me new cheque book containing 25 leaves.

  .....

  (मुझे 25 पन्नों वाली एक नई चेकबुक जारी करें।)

- Issue me a new debit card as my old card has been mutilated.

  .....

  (मुझे नया डेबिट कार्ड जारी करें क्योंकि मेरा पुराना कार्ड विकृत हो गया है।)

I agree that bank may debit my account for the service charges as applicable.

.....

(मैं बैंक द्वारा लागू सेवा शुल्क को मेरे खाते से डेबिट करने के लिए सहमत हूँ।)

- I request you to confirm my signature from your records as well as confirm that I have a saving account in your branch.

  .....

  .....

  (आपसे अनुरोध है कि कृपया अपने रिकॉर्ड से मेरे हस्ताक्षर की पुष्टि करें। साथ ही, यह भी पुष्टि करें कि आपकी शाखा में बचत खाता है।)

- If the loan is granted to me / us, I / we hereby agree to produce the vehicles(s) for inspection at your branch every six months or at shorter intervals as required by the bank.

  .....

  .....

  .....

  (यदि मुझे/हमें ऋण मंजूर हुआ तो मैं/हम वाहन/वाहनों को आपकी शाखा में निरीक्षण के लिए हर छः महीने या बैंक चाहे तो उससे कम अंतरालों में प्रस्तुत करना स्वीकार करता/करती हूँ/करते हैं।)

- If the advance is granted I / We hereby give my / our consent that the vehicle will be brought to the branch once in every six months or on the Bank's desire for inspection.

  ……

  ……

  ……

  (यदि अग्रिम मंजूर किया जाता है, तो मैं/हम एतद्द्वारा अपनी सम्मति देता/देती हूँ/देते हैं कि वाहन को निरीक्षण के लिए हर छह महीने में बैंक की इच्छा के अनुसार शाखा में लाया जाएगा।)

- As the nominee is minor on this date, we appoint Sh./Smt/Km. …… (name, address, age) to receive the amount of the deposit on behalf of the nominee in the event of my/our minor's death during the minority of the nominee.

  ……

  ……

  ……

  (जैसा कि इस तारीख को नाम निर्देशिती अवयस्क है, मैं/हम श्री/श्रीमती/कुमारी .....(नाम, पता, आयु) को मेरी/हमारी अवयस्क की मृत्यु की दशा में नाम निर्देशिती की अवयस्कता के दौरान नाम निर्देशिती की ओर से जमा राशि प्राप्त करने के लिए नियुक्त करता हूँ/हैं।)

- 'That all cheques on the banking account be signed and all bills notes and other negotiable instruments be drawn, accepted and made on behalf of the committee by ..... or any two or more them.'

  ……

  ……

  ……

  ("कि समिति की ओर से ..... या किन्हीं दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा खाते के सभी चैकों पर हस्ताक्षर किये जाएँगे और सभी बिल, नोट व अन्य परक्राम्य लिखत, आहृत, स्वीकृत अथवा जारी किए जाएँगे।")

- All depositors are governed by the rules and regulations formulated by the bank from time to time. The rules are framed based on the directions issued by RBI and ground rules/instructions issued by the Indian Banks Association.

  ……

  ……

  ……

  (सभी जमाराशियाँ बैंक द्वारा समय–समय पर निर्धारित नियमों एवं विनियमों के द्वारा नियंत्रित होती हैं। ये नियम भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिए गए निर्देशों एवं भारतीय बैंक संघ द्वारा जारी किए गए आधार नियमों/अनुदेशों के आधार पर बनाए जाते हैं।)

- Resolved that a Banking Account for the Company, be opened with …….. Bank and that the said Bank be and hereby authorised to honour cheques, bills of exchange and Promissory notes drawn, accepted or made on behalf of the Company by and to act on instructions so given relating to the account, whether the same be overdrawn or not or relating to the transaction of the Company.

  ……

  ……

  (संकल्प किया जाता है कि ..... बैंक में कंपनी का एक खाता खोला जाए और उक्त बैंक को प्राधिकार दिया जाता है कि कंपनी की ओर से ..... द्वारा काटे गये या स्वीकृत चैक, विनिमय–पत्र तथा वचन–पत्र (प्रोनोट) पास किये जाएँ। प्रस्तुत खाते के संबंध में दी गई हिदायतों का पालन किया जाए, चाहे खाते में जमा राशि में से अधिक रकम निकाल ली गयी हो या नहीं, चाहे ये कंपनी के लेन–देन से संबंधित हों या नहीं।)

- I/We certify that all information furnished by me/us is true, that I/We have no borrowing arrangements for the units with any bank, that no legal action has been/is being taken against me/us; that I/we shall furnish all other information that may be required by you in connection with my/our application .....

  ……

  ……

  (मैं/हम प्रमाणित करता/करती हूँ/करते हैं कि मेरे/हमारे द्वारा दिए गए सभी ब्यौरे सही हैं; कि इस इकाई के लिए मैंने/हमने किसी और बैंक से ऋण नहीं लिया है; कि मेरे/हमारे विरुद्ध कोई भी कानूनी कार्रवाई नहीं की गई है/की जा रही है; कि मैं/हम अपने आवेदन से संबंधित; आप द्वारा अपेक्षित सूचनाएँ दूँगा/दूँगी/देंगे।)

- I hereby apply for a loan of Rs. ..... (Rupees …….....) for the purchase of ..... costing about Rs. ..... from ..... I undertake to repay the loan in ..... monthly installments commencing after one month from the grant of the loan.

  ……

  ……

  (मैं एतद्द्वारा ..... से लगभग ..... रु. मूल्य की ..... खरीदने के लिए ..... रु. (शब्दों में ..... रुपए) के ऋण के लिए आवेदन करता/ करती हूँ। मैं ऋण स्वीकृत होने के एक महीने की अवधि के पश्चात् .... मासिक किस्तों में ऋण की अदायगी करने का वचन देता/देती हूँ।)

19.6 सारांश

बैंकिंग अनुवाद से संबंधित इस इकाई को ध्यान से पढ़ने के बाद अब आप यह जान गए हैं कि प्रशासनिक–वाणिज्यिक क्षेत्र के रूप में बैंकिंग एक प्रमुख व्यवसाय है और उसमें अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। मूलतः सेवा क्षेत्र के रूप में अपनी पहचान

बनाने वाले इस क्षेत्र का संबंध आम जनता से है और इसकी कार्य–प्रणाली तभी सार्थक तरीके से कार्य कर पाती है जब वह जनता की भाषा से जुड़ी हुई हो। वैसे, सांविधानिक और वैधानिक व्यवस्थाओं के कारण बैंकिंग के क्षेत्र में अनुवाद अपनी अनिवार्य स्थिति बना चुका है क्योंकि इस क्षेत्र से संबंधित ज्यादातर साहित्य अंग्रेजी में है और मूलतः इसी भाषा में काम किया जाता है। इसलिए बैंकिंग साहित्य के अनुवाद की स्थिति बनी रहती है। अनुवाद, एक चुनौती भरा कार्य है और कुछ अपेक्षाएँ रखता है जिसमें अनूदित पाठ के पाठक वर्ग का ध्यान रखना तक शामिल है। अनुवादक को बैंक से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली और उसके विविध आयामों से परिचित कराने का प्रयास भी इस इकाई में किया गया है। लेकिन, उसके अनुवाद के संदर्भ में उसे कई प्रकार की चुनौतियों–समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है, जिनपर इस इकाई में सोदाहरण चर्चा की गई है। बैंकिंग साहित्य के अनुवाद संबंधी अभ्यास के नमूने और अनूदित वाक्यों का विश्लेषणात्मक विवेचन अनुवादक के लिए दिशा–निर्देश का काम करेंगे। इसके अलावा, इकाई में अभ्यास के लिए छोटे–छोटे वाक्य भी दिए गए हैं। विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इसी प्रकार और अधिक अभ्यास कर अपने कौशल को बेहतर बनाएँ क्योंकि अनुवाद मूलतः व्यावहारिक गतिविधि है और अभ्यास से इसमें निखार आता है।

19.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. बैंकिंग साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली के महत्व का उल्लेख कीजिए।
2. बैंकिंग साहित्य का अनुवाद के पूर्वापेक्षा के रूप में विषय एवं संदर्भ सापेक्षता के बोध का महत्व स्पष्ट कीजिए।
3. बैंकिंग साहित्य का अनुवाद करते समय पाठक वर्ग को ध्यान में रखना क्यों जरूरी है? चर्चा कीजिए।
4. बैंकिंग अनुवाद में उपयुक्त शब्द चयन की चुनौती और सामान्य प्रतीत होने वाले शब्दों का अनुवाद के संदर्भ का विवेचन कीजिए।
5. 'बैंकिंग अनुवाद और अभिव्यक्ति शैली' पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए।

19.8 उपयोगी पुस्तकें

––, *इंडियन फाइनेंशियल सिस्टम और कमर्शियल बैंकिंग*, मुंबई, भारतीय बैंकर संस्थान।

––, *बैंकिंग के सिद्धांत*, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस।

––, *बैंक : सामान्य प्रबंधन*, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस।

––, *बैंकिंग शब्दावली (अंग्रेजी–हिंदी)*, मुंबई, भारतीय रिज़र्व बैंक।

––, *बैंकिंग पारिभाषिक कोश*, भारतीय रिज़र्व बैंक।

––, *बैंकिंग चिंतन–अनुचिंतन* (त्रैमासिक पत्रिका), भारतीय रिज़र्व बैंक।

––, *विधि शब्दावली*, नई दिल्ली, विधायी विभाग, राजभाषा खंड; विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार।

तिवारी, भोलानाथ एवं द्विवेदी, श्रीनिवास. *बैंकों में अनुवाद की समस्याएँ*, दिल्ली, आर्य प्रकाशन मंडल।

कुंचितपादम, सीता, *बैंकों में अनुवाद प्रविधि*, नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।